''मीठे बच्चे – तुम अभी पुरानी दुनिया के गेट से निकलकर शान्तिधाम और सुखधाम में जा रहे हो, बाप ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं''

प्रश्नः- वर्तमान समय सबसे अच्छा कर्म कौन सा है?

उत्तरः- सबसे अच्छा कर्म है मन्सा, वाचा, कर्मणा अन्धों की लाठी बनना। तुम बच्चों को विचार सागर मंथन करना चाहिए कि ऐसा कौन-सा शब्द लिखें जो मनुष्यों को घर का (मुक्ति का) और जीवनमुक्ति का रास्ता मिल जाए। मनुष्य सहज समझ लें कि यहाँ शान्ति सुख की दुनिया में जाने का रास्ता बताया जाता है।

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) मन्सा-वाचा-कर्मणा कभी भी क्रोध नहीं करना है। इन तीनों खिड़कियों पर बहुत ध्यान रखना है। वाचा अधिक नहीं चलाना है। एक-दो को दु:ख नहीं देना है।
2) ज्ञान और योग में मस्त रह अन्तिम सीन सीनरी देखनी हैं। अपने वा दूसरों के नामरूप को भूल मैं आत्मा हूँ, इस स्मृति से देहभान को समाप्त करना है।

वरदानः- स्नेह के बाण द्वारा स्नेह में घायल करने वाले स्नेह और प्राप्ति सम्पन्न लवलीन आत्मा भव

जैसे लौकिक रीति से कोई किसके स्नेह में लवलीन होता है तो चेहरे से, नयनों से, वाणी से अनुभव होता है कि यह लवलीन है – आशिक है – ऐसे जब स्टेज पर जाते हो तो जितना अपने अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज होगा उतना ही स्नेह का बाण औरों को भी स्नेह में घायल कर देगा। भाषण की लिंक सोचना, प्वाइंट दोहराना – यह स्वरूप नहीं हो, स्नेह और प्राप्ति का सम्पन्न स्वरूप, लवलीन स्वरूप हो। अथॉरिटी होकर बोलने से उसका प्रभाव पड़ता है।

स्लोगनः- सम्पूर्णता द्वारा समाप्ति के समय को समीप लाओ।

अव्यक्त इशारे

सत्यता और सभ्यता रूपी कल्चर को अपनाओ

यह तो सब समझने लगे हैं कि यह 'कोई हैं', लेकिन यही हैं और यह एक ही हैं, यह हलचल का हल अब चलाओ। अभी और भी हैं, यह भी हैं यहाँ तक पहुंचे हैं लेकिन यह एक ही हैं, अभी ऐसा तीर लगाओ। धरनी तो बन गई और बनती जायेगी। लेकिन जो फाउन्डेशन है, नवीनता है, बीज है, वह है नया ज्ञान। नि:स्वार्थ प्यार है, रुहानी प्यार है यह तो अनुभव करते हैं लेकिन अभी प्यार के साथ-साथ ज्ञान की अथॉरिटी वाली आत्मायें हैं, सत्य ज्ञान की अथॉरिटी हैं, यह प्रत्यक्ष करो तब प्रत्यक्षता हो।

''मीठे बच्चे – बाप नॉलेजफुल है, उन्हें जानी जाननहार कहना, यह उल्टी महिमा है, बाप आते ही हैं तुम्हें पतित से पावन बनाने''

प्रश्नः- बाप के साथ-साथ सबसे अधिक महिमा और किसकी है और कैसे?

उत्तरः- 1. बाप के साथ भारत की महिमा भी बहुत है। भारत ही अविनाशी खण्ड है। भारत ही स्वर्ग बनता है। बाप ने भारतवासियों को ही धनवान, सुखी और पवित्र बनाया है। 2. गीता की भी अपरमअपार महिमा है, सर्वशास्त्रमई शिरोमणी गीता है। 3. तुम चैतन्य ज्ञान गंगाओं की भी बहुत महिमा है। तुम डायरेक्ट ज्ञान सागर से निकली हो।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) ऊंच पद के लिए श्रीमत पर चल अच्छे मैनर्स धारण करने हैं।

2) सच्चा आशिक बन एक माशूक को ही याद करना है। जितना हो सके याद का अभ्यास बढ़ाते जाना है।

वरदान:- निमित्तपन की स्मृति से माया का गेट बन्द करने वाले डबल लाइट भव

जो सदा स्वयं को निमित्त समझकर चलते हैं उन्हें डबल लाइट स्थिति का स्वत:अनुभव होता है। करन-करावनहार करा रहे हैं, मैं निमित्त हूँ – इसी स्मृति से सफलता होती है। मैं पन आया अर्थात् माया का गेट खुला, निमित्त समझा अर्थात् माया का गेट बन्द हुआ। तो निमित्त समझने से मायाजीत भी बन जाते और डबल लाइट भी बन जाते। साथ-साथ सफलता भी अवश्य मिलती है। यही स्मृति नम्बरवन लेने का आधार बन जाती है।

स्लोगन:- त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म करो तो सफलता सहज मिलती रहेगी।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

शिव शक्ति का अर्थ ही है कम्बाइण्ड। बाप और आप – दोनों को मिलाकर कहते हैं शिवशक्ति। तो जो कम्बाइन्ड है, उसे कोई अलग नहीं कर सकता। यही याद रखो कि हम कम्बाइण्ड रहने के अधिकारी बन गये। पहले ढूँढने वाले थे और अभी साथ रहने वाले हैं – यह नशा सदा रहे।

''मीठे बच्चे – इस पुरानी पतित दुनिया से तुम्हारा बेहद का वैराग्य चाहिए क्योंकि तुम्हें पावन बनना है, तुम्हारी चढ़ती कला से सबका भला होता है''

प्रश्नः- कहा जाता है, आत्मा अपना ही शत्रु, अपना ही मित्र है, सच्ची मित्रता क्या है?

उत्तरः- एक बाप की श्रीमत पर सदा चलते रहना – यही सच्ची मित्रता है। सच्ची मित्रता है एक बाप को याद कर पावन बनना और बाप से पूरा वर्सा लेना। यह मित्रता करने की युक्ति बाप ही बतलाते हैं। संगमयुग पर ही आत्मा अपना मित्र बनती है।

गीतः- तूने रात गँवाई...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) गायन वा पूजन योग्य बनने के लिए पक्का वैष्णव बनना है। खान-पान की शुद्धि के साथ-साथ पवित्र रहना है। इस वैल्युबुल जीवन में सर्विस कर बहुतों का जीवन श्रेष्ठ बनाना है।

2) बाप के साथ ऐसा योग रखना है जो आत्मा की लाइट बढ़ती जाए। कोई भी विकर्म कर लाइट कम नहीं करना है। अपने साथ मित्रता करनी है।

वरदानः- स्व-स्थिति की सीट पर स्थित रह परिस्थियों पर विजय प्राप्त करने वाले मास्टर रचता भव

कोई भी परिस्थिति, प्रकृति द्वारा आती है इसलिए परिस्थिति रचना है और स्व-स्थिति वाला रचयिता है। मास्टर रचता वा मास्टर सर्वशक्तिवान कभी हार खा नहीं सकते। असम्भव है। अगर कोई अपनी सीट छोड़ते हैं तो हार होती है। सीट छोड़ना अर्थात् शक्तिहीन बनना। सीट के आधार पर शक्तियाँ स्वत: आती हैं। जो सीट से नीचे आ जाते उन्हें माया की धूल लग जाती है। बापदादा के लाडले, मरजीवा जन्मधारी ब्राह्मण कभी देह अभिमान की मिट्टी में खेल नहीं सकते।

स्लोगनः- दृढ़ता कड़े संस्कारों को भी मोम की तरह पिघला (खत्म कर) देती है।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

जैसे ज्ञान स्वरूप हो ऐसे स्नेह स्वरूप बनो, ज्ञान और स्नेह दोनों कम्बाइन्ड हो क्योंकि ज्ञान बीज है, पानी स्नेह है। अगर बीज को पानी नहीं मिलेगा तो फल नहीं देगा। ज्ञान के साथ दिल का स्नेह है तो प्राप्ति का फल मिलेगा।

''मीठे बच्चे – तुम्हारा यह नया झाड़ बहुत मीठा है, इस मीठे झाड़ को ही कीड़े लगते हैं, कीड़ों को समाप्त करने की दवाई है मनमनाभव''

प्रश्नः- पास विद् ऑनर होने वाले स्टूडेन्ट की निशानी क्या होगी?

उत्तरः- वह सिर्फ एक सब्जेक्ट में नहीं लेकिन सभी सब्जेक्ट पर पूरा-पूरा ध्यान देंगे। स्थूल सर्विस की भी सब्जेक्ट अच्छी है, बहुतों को सुख मिलता है, इससे भी मार्क्स जमा होती हैं लेकिन साथ-साथ ज्ञान भी चाहिए तो चलन भी चाहिए। दैवीगुणों पर पूरा अटेन्शन हो। ज्ञान योग पूरा हो तब पास विद् ऑनर हो सकेंगे।

गीतः- न वह हमसे जुदा होंगे...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) अपनी ऊंच तकदीर बनाने के लिए आपस में बहुत-बहुत क्षीरखण्ड, मीठा होकर रहना है, कभी लून-पानी नहीं होना है। सभी सब्जेक्ट पर पूरा अटेन्शन देना है।

2) सद्गति के लिए बाप की जो श्रेष्ठ मत मिली है, उस पर चलना है और सबको श्रेष्ठ मत ही सुनानी है। स्वर्ग में जाने का रास्ता दिखाना है।

वरदानः- हर आत्मा को हिम्मत, उल्लास दिलाने वाले, रहमदिल, विश्व कल्याणकारी भव

कभी भी ब्राह्मण परिवार में किसी कमज़ोर आत्मा को, तुम कमज़ोर हो – ऐसे नहीं कहना। आप रहमदिल विश्व कल्याणकारी बच्चों के मुख से सदैव हर आत्मा के प्रति शुभ बोल निकलने चाहिए, दिलशिकस्त बनाने वाले नहीं। चाहे कोई कितना भी कमज़ोर हो, उसे इशारा या शिक्षा भी देनी हो तो पहले समर्थ बनाकर फिर शिक्षा दो। पहले धरनी पर हिम्मत और उत्साह का हल चलाओ फिर बीज डालो तो सहज हर बीज का फल निकलेगा। इससे विश्व कल्याण की सेवा तीव्र हो जायेगी।

स्लोगनः- बाप की दुआयें लेते हुए सदा भरपूरता का अनुभव करो।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

सदा हर कर्म करते हुए अपने को कर्मयोगी आत्मा अनुभव करो। कोई भी कर्म करते हुए याद भूल नहीं सकती। कर्म और योग – दोनों कम्बाइन्ड हो जाएं। जैसे कोई जुड़ी हुई चीज़ को अलग नहीं कर सकता, ऐसे कर्मयोगी बनो।

''मीठे बच्चे – अभी तुम पुरुषोत्तम बनने का पुरुषार्थ करते हो, पुरुषोत्तम हैं देवतायें, क्योंकि वह हैं पावन, तुम पावन बन रहे हो''

प्रश्नः- बेहद के बाप ने तुम बच्चों को शरण क्यों दी है?

उत्तरः- क्योंकि हम सब रिफ्युज़ के (किचड़े के) डिब्बे में पड़े हुए थे। बाप हमें किचड़े के डिब्बे से निकाल गुल-गुल बनाते हैं। आसुरी गुण वालों को दैवी गुणवान बनाते हैं। ड्रामा अनुसार बाप ने आकर हमें किचड़े से निकाल एडाप्ट कर अपना बनाया है।

गीतः- यह कौन आया आज सवेरे-सवेरे...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) देवता बनने के लिए बहुत रॉयल संस्कार धारण करने हैं। खान-पान बहुत शुद्ध और साधारण रखना है। लालच नहीं करनी है। अपना कल्याण करने के लिए दैवीगुण धारण करने हैं।

2) अपने ऊपर ध्यान रखते, सबके साथ बहुत प्यार से चलना है। अपने से जो सीनियर हैं, उनका रिगार्ड जरूर रखना है। बहुत-बहुत मीठा बनना है। देह-अभिमान में नहीं आना है।

वरदानः- बीती हुई बातों को रहमदिल बन समाने वाले शुभ चिंतक भव

यदि किसी की बीती हुई कमज़ोरी की बातें कोई सुनाये तो शुभ भावना से किनारा कर लो। व्यर्थ चिंतन या कमजोरी की बातें आपस में नहीं चलनी चाहिए। बीती हुई बातों को रहमदिल बनकर समा लो। समाकर शुभ भावना से उस आत्मा के प्रति मन्सा सेवा करते रहो। भले संस्कारों के वश कोई उल्टा कहता, करता या सुनता है तो उसे परिवर्तन करो। एक से दो तक, दो से तीन तक ऐसे व्यर्थ बातों की माला न हो जाए। ऐसा अटेन्शन रखना अर्थात् शुभ चिंतक बनना।

स्लोगनः- सन्तुष्टमणी बनो तो प्रभु प्रिय, लोकप्रिय और स्वयंप्रिय बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे
कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

जैसे शरीर और आत्मा कम्बाइन्ड है तो जीवन है। यदि आत्मा शरीर से अलग हो जाए तो जीवन समाप्त हो जाता। ऐसे कर्मयोगी जीवन अर्थात् कर्म योग के बिना नहीं, योग कर्म के बिना नहीं। सदा कम्बाइन्ड हो तो सफलता मिलती रहेगी।

''मीठे बच्चे – तुम्हें अभी नाम रूप की बीमारी से बचना है, उल्टा खाता नहीं बनाना है, एक बाप की याद में रहना है''

प्रश्नः- भाग्यवान बच्चे किस मुख्य पुरुषार्थ से अपना भाग्य बना देते हैं?

उत्तरः- भाग्यवान बच्चे सबको सुख देने का पुरुषार्थ करते हैं। मन्सा-वाचा-कर्मणा कोई को दु:ख नहीं देते हैं। शीतल होकर चलते हैं तो भाग्य बनता जाता है। तुम्हारी यह स्टूडेन्ट लाइफ है, तुम्हें अब घुटके नहीं खाने हैं, अपार खुशी में रहना है।

गीतः- तुम्हीं हो माता-पिता...

धारणा के लिए मुख्य सारः-

1) निर्बन्धन बनने के लिए ज्ञान की मस्ती हो। देह-अभिमान की चलन न हो। आपस में लूनपानी होने के संस्कार न हो। देहधारियों से प्यार है तो बंधनमुक्त हो नहीं सकते।

2) कर्मयोगी बनकर रहना है, याद में बैठना जरूर है। आत्म-अभिमानी बन बहुत मीठा और शीतल बनने का पुरुषार्थ करना है। सर्विस में हड्डियाँ देनी है।

वरदानः- श्रीमत से मनमत और जनमत की मिलावट को समाप्त करने वाले सच्चे स्व कल्याणी भव

बाप ने बच्चों को सभी खजाने स्व कल्याण और विश्व कल्याण के प्रति दिये हैं लेकिन उन्हें व्यर्थ तरफ लगाना, अकल्याण के कार्य में लगाना, श्रीमत में मनमत और जनमत की मिलावट करना – यह अमानत में ख्यानत है। अब इस ख्यानत और मिलावट को समाप्त कर रुहानियत और रहम को धारण करो। अपने ऊपर और सर्व के ऊपर रहम कर स्व कल्याणी बनो। स्व को देखो, बाप को देखो औरों को नहीं देखो।

स्लोगनः- सदा हर्षित वही रह सकते हैं जो कहीं भी आकर्षित नहीं होते हैं।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

''बाबा और हम'' – कम्बाइण्ड हैं, करावनहार बाबा और करने के निमित्त मैं आत्मा हूँ – इसको कहते हैं असोच अर्थात् एक की याद। शुभचिंतन में रहने वाले को कभी चिंता नहीं होती। जैसे बाप और आप कम्बाइण्ड हो, शरीर और आत्मा कम्बाइण्ड है, आपका भविष्य विष्णु स्वरूप कम्बाइण्ड है, ऐसे स्व-सेवा और सर्व की सेवा कम्बाइण्ड हो तब मेहनत कम सफलता ज्यादा मिलेगी।

06-04-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त बापदादा" रिवाइज:-15-12-2004 मधुबन

''बापदादा की विशेष आशा – हर एक बच्चा दुआयें दे और दुआयें ले''

❖ आज बापदादा अपने चारों ओर के बेफिक्र बादशाहों की सभा को देख रहे हैं। बेफिक्र बादशाह की निशानी है – सदा स्वयं भी सन्तुष्ट और औरों को भी सन्तुष्ट करने वाले। बेफिक्र बनने की विधि है – मेरे को तेरे में परिवर्तन करो। अमृतवेले जब उठो तो चेक करना कि विशेष वर्तमान समय सबकान्सेस में भी कोई बोझ तो नहीं है?

❖ सबसे बड़ा खज़ाना है श्रेष्ठ संकल्प का खज़ाना। संकल्प के खज़ाने को व्यर्थ गँवाना अर्थात् अपने प्राप्तियों को गँवाना। ऐसे ही समय के एक सेकण्ड को भी व्यर्थ गँवाया, सफल नहीं किया तो बहुत गँवाया। साथ में ज्ञान का खज़ाना, गुणों का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना और हर आत्मा और परमात्मा द्वारा दुआओं का खज़ाना। सबसे सहज है पुरुषार्थ में ''दुआयें दो और दुआयें लो।'' सुख दो और सुख लो, न दु:ख दो न दु:ख लो।

❖ अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, अभी भी किसकी बद-दुआ मन में हो तो निकाल दो और कल से दुआ देंगे, दुआ लेंगे।

वरदान:- सर्व शक्तियों को आर्डर प्रमाण अपना सहयोगी बनाने वाले प्रकृति जीत भव

सबसे बड़े ते बड़ी दासी प्रकृति है। जो बच्चे प्रकृतिजीत बनने का वरदान प्राप्त कर लेते हैं उनके आर्डर प्रमाण सर्व शक्तियाँ और प्रकृति रूपी दासी कार्य करती है अर्थात् समय पर सहयोग देती हैं। लेकिन यदि प्रकृतिजीत बनने के बजाए अलबेलेपन की नींद में व अल्पकाल की प्राप्ति के नशे में व व्यर्थ संकल्पों के नाच में मस्त होकर अपना समय गॅवाते हो तो शक्तियां आर्डर पर कार्य नहीं कर सकती इसलिए चेक करो कि पहले मुख्य संकल्प शक्ति, निर्णय शक्ति और संस्कार की शक्ति तीनों ही आर्डर में हैं?

स्लोगन:- बापदादा के गुण गाते रहो तो स्वयं भी गुणमूर्त बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

कम्बाइण्ड रूप की स्मृति से सदा विजयी बनो

कम्बाइण्ड सेवा के बिना सफलता असम्भव है। ऐसा नहीं कि जाओ सेवा करने और लौटो तो कहो माया आ गई, मूड ऑफ हो गया, डिस्टर्ब हो गये इसलिए अन्डरलाइन करो – सेवा में सफलता या सेवा में वृद्धि का साधन है स्व की सेवा और सर्व की कम्बाइण्ड सेवा।